P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-7* (Part-1) March- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

जनसंख्या की व्यवसायिक संरचना, बरमकेला ब्लाक जिला–रायगढ़ (छ.ग.)

हरिहर मालाकार
शोधार्थी,
भूगोल विभाग,
डॉ. सी.वी.रामन् विश्वविद्यालय,
करगी रोड, कोटा बिलासपुर
(छ.ग.)

रत्नेश कुमार खन्ना
शोध निर्देशक एवं सहायक
प्राध्यापक,
भूगोल विभाग,
डॉ. सी.वी.रामन् विश्वविद्यालय,
करगी रोड, कोटा बिलासपुर
(छ.ग.)

काजल मोइत्रा
एसोसिएट प्रोफेसर एवं
विभागाध्यक्ष
भूगोल विभाग,
डॉ. सी.वी.रामन् विश्वविद्यालय,
करगी रोड, कोटा बिलासपुर
(छ.ग.)

सारांश

जीविका उपार्जन के लिए की जाने वाली उत्पादक आर्थिक क्रियाओं से व्यवसाय कहते है। इससे देश की अर्थव्यवस्था तथा आर्थिक विकास के स्तर का ज्ञान होता है। इसके अध्ययन से पता चलता है कि कोई देश कृषि प्रधान, पशुपालन अथवा उद्योग प्रधान है। व्यक्ति की व्यवसायिक स्थिति, उसके विचार, सामाजिक दृष्टिकोण, व्यक्तित्व तथा राजनैतिक सम्बद्धता को प्रकट करता है क्योंकि किसी भी प्रमुख वर्ग में अनेक सामाजिक और आर्थिक स्तर पर लोग होते है।

किसी भी देश की कुल जनसंख्या को दो प्रमुख उपविभागों में बाटा जाता है – पहला आर्थिक दृष्टि से क्रियाशिल जनसंख्या अथवा श्रमशक्ति स्त्री–पुरूषो का वह भाग जो आर्थिक वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन में संलग्न है। दूसरा आर्थिक दृष्टि से अकार्यशील जनसंख्या अथवा निर्भर व्यक्ति जैसे बच्चे, सेवामुक्त वृद्ध, छात्र–छात्राएं, पत्नियां, पेंशन तथा किराया भोगी व्यक्ति।

मुख्य शब्द : क्रियाशिल जनसंख्या, श्रमशक्ति, बरमकेला ब्लाक, रायगढ़।

प्रस्तावना

प्रारम्भ से मनुष्य अपनी विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए कोई न कोई कार्य करता आया है। व्यवसाय की संकल्पना एक गत्यात्मक विचार है जो देश–काल के अनुसार परिर्वतनशील होता है। व्यावसायिक संरचना के अन्तर्गत कुल जनसंख्या में कार्यरत जनसंख्या के विभिन्न व्यवसाय अथवा कार्यो में सलग्नता का अध्ययन किया जाता है। परिश्रम युक्त व्यवसायिक कार्यो में जुड़ी तथा इन्हीं कार्यो से जीविकोपार्जन करने वाली जनसंख्या को आर्थिक रुप से सक्रिय जनसंख्या कहा जाता है। किसी निश्चित आर्थिक कार्य के अन्तर्गत जुड़ी हुई है इसी सक्रिय जनसंख्या के आनुपातिक वितरण को जनसंख्या की व्यावसायिक संरचना कहने है। संयुक्त राष्ट्र के अनुसार कई प्रकार के व्यावसायिक वर्ग होते हैं। जैसे– कृषि, वानिकी, आखेट, मत्स्य पालन, पशुपालन, खनन उत्खनन, विनिर्माण उद्योग, निर्माण कार्य, बिजली गैस, जल एवं स्वास्थ्य सेवाएं, वाणिज्य, परिवहन, भण्डारण एवं संचार सेवाएँ तथा अनेक अवर्गीकृत व्यवसाय। यह वर्गीकरण अन्तर्राष्ट्रीय तुलना के लिए होता है, लेकिन प्रत्येक देश अपनी जनसंख्या को अपनी आवश्यकतानुसार अलग–अलग व्यावसायिक वर्गों में वर्गीकृत करता है।

भारत में 72.72 प्रतिशत जनसंख्या ग्रामीण है तथा देश कि 50.02 प्रतिशत जनसंख्या कृषि कार्य में लगी हुई है। यहां 40.02 करोड़ कुल श्रमिक है जिसमें मुख्य कर्मी 31.3 करोड़ सीमांत कर्मी 8.9 करोड़ है। जनसंख्या के व्यवसायिक संरचना का तात्पर्य कुल कार्यशील जनसंख्या का विभिन्न व्यवसायों या व्यावसायिक वर्गो में वितरण से है। यहां व्यवसाय का अर्थ उन आर्थिक क्रियाओं से है जिनसे व्यक्ति को आय की प्राप्ति होती है।

साहित्यावलोकन

पूर्व साहित्य की समीक्षा करे तो बहुत सारे शोध कर्ताओं ने विभिन्न व्यवसायिक संरचनाओं पर शोध कार्य किये है। इन्होने अनेक क्षेत्रों को शोध किया है, जिसमें स्पष्ट किया है कि किसी भी क्षेत्र या देश का विकास वहां के आर्थिक व व्यवसायिक दशा पर निर्भर करती है।

पंडा बी.पी. (1988) – इन्होंने 1971 के श्रमिक की अन्तराष्ट्रीय परिभाषा को अपनाते हुए क्रियाशिल जनसंख्या का वर्गीकरण किया है। इन्होने 1971 और 1981 जनगणना के आकड़े के आधार पर तुलनात्मक वर्गीकरण प्रस्तुत किया है। इस प्रकार 1981 में कुल क्रियाशील जनसंख्या के अंश में कोई महत्वपूर्ण वृद्धि नही हुई।

टोण्डे आशलता (2012)– टोण्डे जी ने स्पष्ट किया कि किसी भी देश या क्षेत्र का विकास वहां की आर्थिक व व्यवसायिक दशा पर निर्भर करती है। जहां पर आर्थिक एवं व्यापार के साधन अधिक होते है, वह क्षेत्र या गांव विकसित गांव या क्षेत्र कहलाता है। इसके अध्ययन से पता चलता है कि कोई भी देश कृषि प्रधान पशु पालन या उद्योग प्रधान होता है। व्यक्ति की व्यावसायिक स्थिति उसके विचार, समाजिक दृष्टिकोण व्यक्तित्व तथा राजनैतिक सम्बंध को भी देश या गांव में आय स्त्रोत के रुप में मुख्यतः कृषि मजदूरी व अन्य साधन अपनाये जाते है। जिससे गांव व देश के व्यक्ति अपना भरण–पोषण करते है। कुछ बच जाता है जिसको विकास कार्यो में उपयोग किया जाता है।

राकेश रूकमनी (2014) – राकेश जी ने अपने अध्ययन में यह स्पष्ट किया है कि मानव द्वारा अपने जीविकोपार्जन के लिए किये जाने वाले अपने कार्य या पेशा है। किसी भी क्षेत्र की आर्थिक सरंचना का आकलन वहां की सम्पूर्ण जनसंख्या के कार्य करने वाले व्यक्तियों से करते है। क्योंकि जिन क्षेत्रों में कार्यरत व्यक्तियों का प्रतिशत अधिक होगा उन क्षेत्रों की आर्थिक सरंचना भी सुदृढ़ होगी।

वर्मा एल. एन. (2017) – इन्होने अपने शोध कार्य के दौरान यह देश की छ.ग. के लोगों का प्रमुख व्यवसाय कृषि है जिसमें प्रदेश की 80 प्रतिशत जनसंख्या संलग्न है। यहां की कृषि जीवन निर्वहन प्रकार की है, यहां 90 प्रतिशत से अधिक कृषि भूमि पर खाद्यान्न फसले आई जाती है, जिसमें धान की फसल प्रमुख है।

अध्ययन क्षेत्र

रायगढ़ जिला छ.ग. का एक पूर्वी जिला है। बरमकेला विकासखण्ड रायगढ़ जिले के दक्षिण में स्थित है। बरमकेला वि.ख. के उत्तर में रायगढ़ का पुसौर विकासखण्ड और पश्चिम में सरंगढ़, उत्तर पश्चिम में जांजगीर चांपा जिला तथा दक्षिण में महासमुन्द जिला पूर्व में उड़ीसा राज्य से घिरा हुआ है।

बरमकेला ब्लाक का कुल क्षेत्रफल 781.34 वर्ग कि.मी. है। यहां कि कुल जनसंख्या 1,381,58 है। कुल ग्रामों की संख्या 248 है। बरमकेला की लगभग सम्पूर्ण जनसंख्या ग्रामीण है। और बरमकेला विकासखण्ड का अधिकांश भाग समतल मैदानी है इसलिए यहां की अधिकांश जनसंख्या कृषि कार्य में सलग्न है। अल्प जनसंख्या ही कृषि के अतिरिक्त खनन, उद्योग, व्यापार, वाणिज्य, आदि, क्रिया में सम्मिलित है।

यहां के अधिकांश कृषकों के जोत का आकार होता है। और अधिकांश कृषक सिंचाई के लिए मानसुन पर निर्भर है। यहां की कृषि जीवन निर्वहन प्रकार की है, बहुत ही कम लोग व्यापारिक उद्देश्य से कृषि कार्य करते है। कृषि के अतिरिक्त विनिर्माण उद्योग–वाणिज्य–व्यापार और प्रशासनिक कार्यो में भी यहां की कुछ जनसंख्या सम्मिलित है।

अध्ययन का उद्देश्य

1. अध्ययन क्षेत्र में व्यवसायिक सरंचना का अध्ययन करना।
2. अध्ययन क्षेत्र के विभिन्न व्यवसायिक वर्गो का अध्ययन करना।
3. अध्ययन क्षेत्र के आर्थिक विकास के स्तर का अध्ययन करना।
4. अध्ययन क्षेत्र के व्यवसायिक संरचना में स्त्री–पुरूष दर का अध्ययन करना।
5. अध्ययन क्षेत्र के व्यवसायिक वर्गो की बहुलता का पता लगाना।
6. क्षेत्र के व्यवसाय संबंधी समस्याओं की समाधान तथा विकासात्मक दिशा प्रदान करने हेतु उपयुक्त नियोजन प्रणाली का प्रस्तुतीकरण।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत अध्ययन में मुख्यतः 2011 की जनगणना से प्राप्त द्वितियक आकड़ो का प्रयोग किया जाएगा। रायगढ़ जिले के बरमकेला ब्लाक में व्यवसायिक सरंचना से संबंधित महत्वपूर्ण सूचनाएं विभिन्न जनगणनाओं से लिया जाएगा। रायगढ़ जिले के बरमकेला ब्लाक की व्यवसाय से संबंधित आकड़ो का उपयोग किया जाएगा। व्यवसाय संबंधी विभिन्न आकड़ो का संललन संबंधित कार्यलयों जिला कलेक्ट्रेट, जनपद पंचायत बरमकेला तथा जिला सांख्यिकी अधिकारी व अन्य शासकीय, अर्द्धशासकीय कार्यालयों, विभिन्न शोध पत्रिकाओं से पुरा किया जायेगा और आकड़े एकत्रित कर आकड़ो का वर्गीकरण, सारणीयन व विशलेषण कर णितीय सांख्यिकीय विधियों का उपयोग कर निष्कर्ष प्राप्त किये जायेगें ताकि अध्ययन की सार्थकता बाकी रहे।

परिकल्पना

1. व्यवसायिक सरचना के अध्ययन से व्यवसाय से सम्बंधित आर्थिक नितियों का मूल्याकंन सम्भव हो जाएगा।
2. व्यवसायिक संरचना के अध्ययन से व्यवसाय निर्धारण में सहायता मिलेगी।
3. क्षेत्र के आर्थिक विकास स्तर का मूल्यांकन सम्भव हो जायेगी।

श्रम शक्ति के आकार को प्रभावित करने वाले कारक

किसी भी प्रदेश में श्रम शक्ति का आकार कई आर्थिक जनाकिकी और सामाजिक कारकों पर निर्भर करता है। ये कारक न केवल श्रमशक्ति के आकार से निर्धारित करते है वरन् उसके स्तर को भी प्रभावित करते है।

आर्थिक कारक

आर्थिक कारक के अर्न्तगत अर्थव्यवस्था का प्रकार, रोजगार के अवसरों की उपलब्धि तथा आय का स्तर महत्वपूर्ण है। कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था में कार्य का स्वरुप तथा श्रमशक्ति का आकार उद्योग प्रधान समाज से भिन्न होता है। इसी तरह निम्न आय स्तर वाले समाज के श्रमशक्ति में भागीदारी अधिक तथा उच्च आय स्तर वाले समान में भागीदारी कम होती है।

जनाकिकी कारक

जनांकिकी कारकों के अर्न्तगत जन्मदर, आयु संरचना तथा जीवन प्रत्याशा अधिक प्रभावशाली है। अवास तथा परिवार का आकार भी श्रमशक्ति के आकार को प्रभावित करते है। उच्च जन्म दर तथा निम्न मृत्युदर वाले

देशों में बाल आयु वर्ग (0–14) का प्रतिशत उच्च तथा वृद्ध आयु वर्ग 65+ का निम्न होता है जिससे निर्भरता अनुपात अधिक होता है। ऐसे देशों में श्रमशक्ति अर्थात् युग व प्रौढ़ वर्ग (15 से 64 वर्ष) तुलनात्मक दृष्टि से छोटा होता है।

सामाजिक कारक

सामाजिक कारक में साक्षरता तथा शिक्षा का स्तर, समाज में स्त्रियों की स्थिति विवाह की आयु तथा सामान्य स्वास्थ्य संबंधी दशाएं श्रमशक्ति के आकार को प्रभावित करते है। जिस समाज में स्त्रियों की प्रतिष्ठा अधिक और उन्हें समान नागरिक अधिकार होते है वहां श्रमशक्ति में उनकी भागीदारी अधिक होती है। दूसरी ओर जिन समाजों में स्त्रियों की स्थिति निम्न है उनमें वर के बाहार काम करने के प्रति पूर्वाग्रह है। वहां श्रमशक्ति का आकार छोटा होता है। इसी तरह अल्प आयु में विवाह होने पर श्रमशक्ति का आकार बड़ा होता है क्योंकि विवाहितों को शीघ्र ही पारिवारिक उत्तदायित्व वहन करना होता है। स्वास्थ्य संबंधी दशाएँ उत्तम होने पर श्रमशक्ति में नागरिकों की भागीदारी अधिक होती है। एक बीमार देश की श्रमशक्ति भी सीमित होती है। आर्थिक विकास की अवस्था के अनुसार श्रमशक्ति का आकार भी छोटा–बड़ा होता है।

जनसंख्या की व्यावसायिक संरचना

श्रमशक्ति अनेक व्यवसायों में बंटी होती है अतः व्यावसायिक सरचना श्रमशक्ति के स्वरुप को स्पष्ट करती है। किसी भी प्रदेश की व्यवसायिक संरचना को प्रभावित करने वाले अनेक कारक होते है। किसी भी प्रदेश की व्यवसायिक संरचना को प्रभावित करने वाले अनेक कारक होते है जिनमें भौतिक संसाधन आधार सबसे बड़ा महत्वपूर्ण है। भौतिक संसाधनों की विविधता जैसे उत्तम कृषि भूमि कटा फटा समुद्री तल, वनों का आर्थिक व सुगमता अथवा खनिज सम्पन्न भू–गर्मिक संरचनाएं तदनुरुप व्यवसायों को जन्म देते है। उन्नत देशों में इन ससांधनों का उपयोग अधिक और पिछड़े देशों में कम होता है। औद्योगीकरण न केवल इन संसाधनों अनुकुलतम उपयोग करता है अतिरिक्त रोजगार के नये क्षेत्र प्रदान करता है। साम्यवादी देशों में व्यवसायिक संरचना, राजनैतिक कारकों से भी प्रभावित रहता है क्योकि वहां पर राष्ट्र की आवश्यकता के अनुसार व्यवसाय चुने जाते है। कार्यशील जनसंख्या (अर्थात् 15–59 आयु वर्ग में स्त्री और पुरुष) कृषि वानिकी, मत्स्य, विनिर्माण, निर्माण, व्यावसायिक परिवहन, सेवाओं, संचार तथा अन्य अवर्गीकृत सेवाओं में सलग्न है। जिन देशों में अल्प विकसित अर्थ व्यवस्था पायी जाती है वहां प्राथमिक व्यवसाय में जनसंख्या का अनुपात अधिक सक्रिय होते है। अति विकसित या औद्योगिक देशों में तृतियक व्यवसाय में 40–45 प्रतिशत तक कार्यशील जनसंख्या सक्रिय रहती है। संयुक्त राज्य अमेरिका तथा पश्चिम युरोपीय देशों में इस व्यवसाय में 60–70 प्रतिशत तक जनसंख्या जुड़ी है। चतुर्थक व्यवसाय का प्रतिशत जनसंख्या में तुलनात्मक रुप से कम पाया जाता है लेकिन इनकी आय सर्वाधिक होती है। इस व्यवसाय से सम्बन्धित जनसंख्या अपने विचारो शोध आदि कार्यो में समय को गतिशीलता प्रदान करती है।

रायगढ़ जिले का बरमकेला विकासखण्ड मैदानी भाग है मैदानी भाग होने के कारण यहां की अधिकांश जनसंख्या कृषि व्यवसाय पर ही सलग्न है अल्प जनसंख्या ही अन्य व्यवसायों में लगी है। यहां सम्पूर्ण कृषि भूमि के अधिकांश भाग पर खाद्यान्न फसल बोयी जाती है जिनमें धान की फसल प्रमुख्या है। यहां की कृषि जीवन निर्वहन प्रकार की है। और सिचाई के लिए पूर्णतः मानसून पर निर्भर है। और यहां सिचाई का प्रमुख साधन नहर ही है।

श्रमशक्ति का वर्गीकरण

किसी भी देश/प्रदेश की समस्त श्रमशक्ति को तीन प्रमुख व्यवसायिक वर्गो में बांटा जाता है।

प्राथमिक उद्योग

इसके अन्तर्गत उन उद्योगों को सम्मिलित किया जाता है जो मनुष्य के प्राथमिक/प्रारम्भिक व्यवसाय रहे है। जैसे कृषि, पशुपालन, लकड़ी काटना, वनोपज संग्रहण करना, मत्स्य पालन व मछली मारना आदि।

द्वितीय उद्योग

इसके अन्तर्गत कुटीर उद्योग, विनिर्माण उद्योग तथा गृह निर्माण कार्य व उनमें संलग्न श्रमीकों को सम्मिलित किया जाता है बिजली, गैस, जलपूर्ति में कार्यरत् लोग, मशीनों के मरम्मत तथा रख–रखाव के कार्यो में लगें लोग भी इसी के अन्तर्गत वर्गीकृत किए जाते है।

तृतीयक उद्योग

वाणिज्य व व्यापार, परिवहन, संचार, भण्डारण, शिक्षा व स्वास्थ्य सेवाएं, बैकिंग बीमा तथा शासकीय व अशासकीय सेवाएँ इसी वर्ग के अन्तर्गत आते है। तृतीयक उद्योग सेवाओं से सम्बधित होते है जो प्राथमिक व द्वितीयक उद्योगों को वस्तुओं के उत्पादन व निर्माण में मद्द करते है। पर वस्तुओं के उत्पादन से सीधे सम्बंधित नही होते है।

रायगढ़ जिले के बरमकेला विकासखण्ड की अधिकांश जनसंख्या की श्रमशक्ति प्राथमिक और द्वितीयक उद्योगों में विभक्त है। यहां की अधिकांश जनसंख्या प्राथमिक और द्वितीयक क्रियाकलापों में संलग्न है। बहुत ही कम जनसंख्या ही तृतीयक उद्योग में कार्यरत् है।

निष्कर्ष एंव सुझाव

व्यवसाय की संकल्पना एक गत्यात्मक विचार है जो देश काल के अनुसर परिवर्तनशील होता है। जनसंख्या के व्यवसायिक संरचना का तात्पर्य कुल कार्यशील जनसंख्या का विभिन्न व्यवसायों या व्यवसायिक वर्गो में वितरण से है। यहां व्यवसाय का अर्थ उन आर्थिक क्रियाओं से है जिनसे व्यक्ति को अन्य प्राप्त होती है। रागगढ़ जिले के बरमकेला ब्लाक की जनसंख्या का प्रमुख व्यवसाय कृषि है। कृषि प्रधान होने के कारण यहां क्षेत्र सधन बसा हुआ है। यहां की अधिकांश जनसंख्या कृषि कार्य में संलग्न है और शेष जनसंख्या कृषि के अतिरिक्त मजदूरी, खनन, वाणिज्य, व्यापार आदि सेवाओं में संलग्न है। यहां की कृषि जीवन निर्वहन प्रकार की है। यहां की कृषि की मुख्य समस्या जोत का छोटा आकार है और

सिचाई के लिए मानसुन पर निर्भरता तथा सिचाई साधनों का अभाव है। यहां सिचाई साधनों का विकास करके यहां के कृषि की स्थिति को सुदृढ किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *कुमार वी., शिवनारायण गुप्त (2018), ''जनांकिकी'' एस.बी.पी.डी. पाब्लिशिग हाऊस, आगरा*
2. *खाण्डेकर उष्मा (2018) , ''छत्तीसगढ़ के विभिन्न जिलो की जनसंख्या की व्यवसायिक संरचना''*
3. *टोण्डे आशलता (2012) , ''मुंगेली जिला के ग्राम हाथीनाला का जनांकिकीय विशेषताओं के संदर्भ में विशेष अध्ययन''*
4. *दीपिका (2017) , ''जनजातिय भूगोल'' राहूल पाब्लिशिंग हाउस, मेरठ (उ.प्र.),*
5. *पण्डा वी.पी. (1988), ''जनसंख्या भूगोल'' मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल,*
6. *मौर्य एस.डी. (2015), ''जनसंख्या भूगोल'' शारदा पुस्तक भवन इलहाबाद,*
7. *यादव अरुण कुमार (2012), ''जनसंख्या भूगोल'' विश्व भारती पाब्लिकेशन, नई दिल्ली,*
8. *राकेश रुखमणी (2014) , ''बिलासपुर जिले में अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या संरचना एक भौगोलिक अध्ययन''*
9. *वर्मा एल.एन. (2017), ''छत्तीसगढ़ का भूगोल, '' छत्तीसगढ़ राज्य हिन्दी ग्रंथ अकादमी, रायपुर (छ.ग.),*
10. *सिन्हा वी.सी. (2018), ''व्यावासयीक पर्यावरण'' एस. बी.पी.डी. पाब्लिशिग हाऊस, आगरा (उ.प्र.),*
11. *हुसैन माजिद (2018), ''कृषि भूगोल'', रावत पाब्लिकेशन, जयपुर*
12. *हरदेवी माधव (2017), ''छत्तीसगढ़ की अर्थव्यवस्था और आर्थिक भूगोल'' छत्तीसगढ़ राज्य हिन्दी ग्रंथ अकादमी, रायपुर (छ.ग.)*